खण्ड - ग

8

उत्तर - 8

(क)

प्रस्तुत पंक्तियाँ "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कविता की है। इन पंक्तियों में श्री हरिवंशराय बच्चन जी ने पक्षियों के बच्चों की बात की है। उनके अनुसार वे बच्चे अपने माता-पिता का इंतजार कर रहे है। इसीलिए वह नीड़ों से झाँक रहे है।

2

(ख)

चिड़िया अपने बच्चों के बारे में विचार करते हुए की वह उनकी प्रतीक्षा कर रहें हैं सोच कर जल्दी घर पहुँचने का प्रयास करती है। उनके बच्चे खाने की आशा में उनका इंतजार कर रहे होगें। वही कवि के अनुसार उसका कोई भी नहीं है जिसके कारण उसके कदम शिथिल हो जाते है।

2

Previous Pathshala

(ग)

कवि स्वंय से यह प्रश्न करता है कि उसको मिलने को कौन चिंतित होगा? और वह किससे मिलने को चंचल हो?। सही अर्थों में कवि के अनुसार उनका कोई नहीं है। वह समाज में अकेले है। अतः उनके कदम शिथिल हो जाते है।

(घ)

"दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कथन कवि ने समय के तेजी से बीत जाने का ~~कसम~~ वर्णन किया है। कवि के अनुसार तेजी से संरक्षक अपने बच्चों के पास पहुँचने का प्रय करते है, वही कवि के साथ कोई भी नहीं है। इसी प्रकार जीवन रूपी नाव में भी सबको ~~अलग~~ अकेले ही घूमना पड़ता है व एक दिन यह दिन ढल जाता है वह जिंदगी समाप्त हो जाती है। जल्दी-जल्दी में कवि ने पुनरुक्ति प्रकाश का प्रयो

Previous Pathshala

किया है।

2

उत्तर 1

6

(क)

(i) कवि ने सरल भाषा का प्रयोग किया है।
(ii) भाषा सहज है। तत्समनिष्ठ है।
(iii) ~~आत्मनिष्ठ~~ खड़ी बोली का प्रयोग किया है
(iv) प्रस्तुत पंक्तियों में देशज भाषा का भी प्रयोग किया गया है।
उदाहरण → 'लोका देना'।
(v) माँ ने बच्चे की तुलना चाँद के टुकड़े से की है।
(vi) खिलखिलाते बच्चो की हँसी में 'श्रव्य बिंब' है।
(vii) प्रस्तुत पंक्तियाँ रुबाईयाँ से ली गयी है इसमे पहली, दूसरी व चौथी पंक्ति मे ~~तुकांत~~ तुक बैठता है व ~~(ख)~~ तीसरी पांक्ति स्वतंत्र होती है।

2

(ख)

भाव सौंदर्य → प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने माँ का अपने बच्चे के प्रति स्नेह को व्यक्त किया है। माँ अपने

Previous Pathshala

6

चाँद के टुकड़े को आँगन में लिए खड़ी है, वह उसे झुला रही है, बीच-बीच में वह उसे हवा में उछाल देती है जिससे बच्चा बहुत खुशी से हँसने ~~लगत~~ लगता है।
अतः इसमें माँ का बच्चे के प्रति स्नेह को वर्णित किया है।

(ग)

(क) माँ का बच्चे के प्रति स्नेह का चित्रण है अतः ~~स्वभावोक्ति~~ स्वभावोक्ति ~~स्वभाविक्त~~ ~~स्वभावोक्ति~~ अलंकार है।
(ख) रह-रह में पुनरुक्ति प्रकाश है।
(ग) बच्चे को चाँद के टुकड़े की संज्ञा दी गयी है।
(घ) बिंबात्मक रचना है।
(ङ) माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग किया गया है।

Previous Pathshala

6

10

(क) कुँवर नारायण के अनुसार जिस प्रकार बच्चे भेद-भाव से रहित रहते हैं। उनके अनुसार देश, जाति, धर्म, लिंग आदि में कोई अंतर नहीं रहता है। उनके लिए सभी घर समान होते हैं, उसी प्रकार कविता भी घर-घर में घुमती है व अपने विचार सभी को फैलाती है। कवि के अनुसार कविता भी सबको समान मानती है। वह हर किसी समान रूप में शिक्षा देती है।
अतः इसीलिए कवि के अनुसार कविता की उड़ान असीमित होती है। वह बिना मुरझाए महकती है तथा हर व्यक्ति को समान मानती है।

3

(ख)

(ग) संभवतः यह देखा गया है कि कवियों को समाज से कोई मतलब नहीं रहता, परंतु तुलसीदास जी के साथ ऐसा नहीं है। वह अपने समाज की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है। उनके अनुसार किसान के पास खेती नहीं है, भिखारी को कोई भीख नहीं देता, व्यापारी के पास व्यापार करने

Previous Pathshala

8

के लिए रुपये नहीं है। अलग-अलग साधन के लोगों के
पास अपनी जीविका को चलाने के लिए उपयुक्त साधन
नहीं है, अतः वह सब जीविकाविहीन हो गये हैं।
वही एक छंद में तुलसीदास जी ने कहा है कि पेट की
आग समुद्र से भी बड़ी है अतः इसको शांत करने
के लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म, धर्म-अधर्म व अपने
बेटा-बेटी को बेच देते हैं यह उदाहरण स्पष्ट
करते हैं कि तुलसीदास जी को समाज की आर्थिक
विषमताओं की अच्छी समझ थी।

3

11

(क) लेखक जैनेंद्र कुमार के अनुसार बाजार एक मायाजाल है। यह
एक जादू की तरह है। 'बाजार में एक जादू है' का अर्थ
है कि बाजार लोगों को अपने मायाजाल में फँसाता है।
यह अपने रूप, रंग, आकार से लोगों का मन मोह
लेता है।
यह जादू तब काम करता है जब जेब भरी व मन
खाली होता है। जेब भरी पर मन भरा न हो तब

Previous Pathshala

भी यह जादू खूब असर करता है। 2

(ख) इस जादू की मर्यादा यह है कि मनुष्य अपने लोभ व इच्छा के आगे झुक जाता है। जेब भरी हो और मन खाली हो तो यह जादू बहुत चलता है। अतः यह आवश्यक रहता है कि बाजार जाते वक्त मन भरा रहना चाहिए। जिस प्रकार लू में पानी पीकर जाने से लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। इसी प्रकार बाजार जाते भी मन भरा रहना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि मन शून्य हो जाए। 2

(ग) मन खाली होने का अर्थ है मन में विचार न होना। अर्थात मनुष्य अपनी आवश्यकता की चीज न होते हुए भी खरीद लेगा। वह अनावश्यक चीजे खरीद लेता है। इसके परिणाम स्वरूप समय आने पर उसे पछतावा होता है। क्योंकि खाली मन से अनेक चीजें उसे आकर्षित करती हैं और वह उस गहरे जाल में फँस जाता है।
और आखिरी में अपना सिर पीटता है। 2

(घ) जब मनुष्य अनावश्यक चीजों को खरीद कर सभी सामान को

Previous Pathshala

जरूरी मानने लग जाता है व आखिरी पछताता है। तब जादू का ~~आस~~ असर दिखाई देता है। मन पर जादू का असर तब चढ़ता है जब मनुष्य अनावश्यक चीजों को खरीदता है। इससे वह मायाजाल में फँसता चला जाता है व स्वभाव से आलसी बन जाता है।

---

12. (ख) जीजी के अनुसार त्याग भावना से दिया गया ही दान फलीभूत होता है। वह इसे अंधविश्वास नहीं मानती थी। उनका मानना था कि भगवान भी यही चाहते हैं। दान का शास्त्रों में बहुत महत्व बताया गया है। उनके अनुसार अगर अमीर दो-चार रुपये दान दे तो वह दान नहीं कहलायेगा। दान वह होता है जिस चीज की हमारे पास कमी है व हमें उसकी जरूरत हो वह देना। किसान भी जब 50-60 टन खेती करता है तो वह 5-6 सेर अनाज फेंक देता है। इसी प्रकार पानी के दान देने से इंद्र देवता प्रसन्न होंगे व वर्षा करेंगे। परंतु लेखक इन्हें अंधविश्वास मानता है।

Previous Pathshala

(ग) पहलवान की ढोलक मृतक गाँव के लिए संजीवीनी का कार्य करती थी। वह बीमार हुए लोगों की नसों मे स्फूर्ति भर देती थी। मरते हुए लोगों को आँखे मूंदने मे तकलीभ भी नही होती है। वह लोगो के अंदर उत्साह भर देती थी। लोगों के सामने कुश्ती का दृश्य आ जाता था जो उन्हें आत्मविश्वास से भर देता था। पूरे गाँव में यह संजीवीनी की तरह रात्रि की विभीषिका को शांत करने का कार्य करती थी।

3

(घ) चार्ली चैप्लिन का जीवन बड़े कष्टों से बीता। उनकी माँ परित्यकता थी व दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री थी, माँ की मृत्यु का उनका पालन-पोषण उनकी नानी ने किया। उनकी नानी खानाबदोश थी, ~~उस~~ उनका जीवन सामाजिक्ता सामंतवादी, ~~पूंजीवाद~~ पूंजीवाद से मगरूर था जिसने उन्हे घुमंतु चरित्र का बना दिया था। इसके बावजूद जीवन में अत्यंत संघर्ष झेले जिसके कारण चार्ली ने अमीर होकर भी जीवन के मूलतत्व नहीं खोने दिये।

Previous Pathshala

अतः जीवन को अत्याधिक विषमताओं से झेलने के बाद चार्ली ने कभी भी अहं को हावी नहीं होने दिया। उन्होंने खुद पर हँसने का प्रचलन बनाया।

(ङ) 'नमक' कहानी की मूल संवेदना है कि देश मानचित्र पर लकीर खींचने से ही देश अलग नहीं होते, पाठ में सफिया, सिख बीबी, कस्टम अधिकारी, सुनीलदास गुप्ता आदि को देखकर यह पता चलता है। मानचित्र पर लकीर खींचने से मनुष्य की भावनाएँ नहीं नष्ट करी जा सकती है। सिख बीबी लाहौर को अपना वतन बताती है व वहाँ से लाहौरी नमक लाने की सौगात करती है। पकिस्तानी कस्टम अधिकारी अपना वतन दिल्ली बताता है व जामा मस्जिद की सीढ़ियो पर सलाम करने को कहता है। भारतीय कस्टम अधिकारी सुनीलदास गुप्ता ढाका को अपना वतन बताते है।
अतः इन सभी उदाहरणों से नमक पाठ की मूल संवेदना प्रकट होती है।

Previous Pathshala

13

(5)

भूषण का अपने पिताजी को सिल्वर-वैडिंग पर ऊनी ड्रेसिंग गाऊन देना यशोधर पंत जी के मन में अभाव पैदा करता है। उनका मानना है कि उनके बच्चे उन्हें यह नहीं कह रहे कि दूध मैं ला दूँगा। उनका मानना है कि भले बच्चे कितने बड़े क्यों न हो गए हो परंतु उनके मौलिक संस्कारों की आज भी कमी है। आधुनिकता की इस दौर पर वह अपने पिताजी को मदद का आश्वासन देने के बजाए गाऊन देता जो कि उन्हें फटा पैंजामा पहन कर भी आना पड़े।
भूषण के द्वारा दिया गया गाऊन यशोधर जी के मन में अराजकता का भाव पैदा करती है। उनका मानना है कि शायद सारी दुनिया जो हुआ होगा ही में जीती है।

बुजुर्ग पीढ़ी हमसे कुछ आम अपेक्षा करती है। वह चाहती है कि हम संकट की परिस्थितियों में उनकी सहायता करें। उनके कार्य को अपना कार्य समझें, उनकी देखभाल करें। उनके साथ रहें। वह चाहती हैं कि हम

Previous Pathshala

पढ - लिखकर उनकी मदद करें। अपने जीवन को सहजता से जिए परंतु आज की पीढ़ी ऐसा कुछ नहीं करती। इनके अंदर की मानवीय संवेदनाये नष्ट हो रही है।

भूषण के द्वारा पिताजी को दिया गया गाऊन यही मनोदशा दिखलाता है कि हमारे अंदर अभाव कह बढ रहे हैं। अपनो की मदद के लिए हम कामचोरी कर रहे है।

यशोधर बाबू अपने बच्चों से इतना चाहते थे कि वह भी उनका काम में हाथ बटाए परंतु उनके बच्चों को ऐसा कुछ पसंद नहीं था।

आधुनिकता के दौर पर हम मानवीय मूल्य खोते जा रहे है अतः आवश्यकता इन्हे अपनाने व बडो का आदर करने की क्योंकि वह हमारा भला ही चाहते है।

Previous Pathshala

10

14

(क) मेरे विचार से लेखक की पढ़ाई के प्रति दत्ता जी राव का रवैया सही न ही लेखक के पिता का। दत्ता जी राव पढ़ाई का महत्त्व समझते थे व लेखक व उसकी माँ से बात करने के बाद उन्हें आश्वासन देती हैं कि लेखक पढ़ पायेगा। वही लेखक के पिता लेखक को पढ़ना व्यर्थ समझते हैं।
लेखक के पिता के अनुसार लेखक को खेती में मन लगाना चाहिए। वह लेखक से सारा काम करवाना चाहते थे व खुद आराम करना चाहते थे किंतु लेखक को पढ़ना था। वह दत्ताजी राव से बात करने के बाद भी लेखक के सामने शर्त रखते हैं कि सुबह वह खेत का काम करके स्कूल जायेगा व फिर स्कूल से आकर खेत का कार्य करेगा और जरूरत पड़ने पर छुट्टी करेगा। इससे पता चलता है कि उनका रवैया सही नहीं है।
दत्ता जी राव के मतानुसार पढ़ना आवश्यक है। वह लेखक के पिता को डाँटते हैं और उसे स्कूल भेजने को

Previous Pathshala

कहते हैं। और यह भी कहते हैं कि तुझसे नहीं होगा तो मैं खर्चा उठाऊंगा। वह लेखक को भी समझाते हैं कि उसको पढ़ पढ़ाई मन लगाकर करनी होगी।

अतः वह लेखक को हर हालत में पढ़कर नाम कमाने के बारे में ज्ञान कराते हैं। अगर दत्ताजीराव न होते तो लेखक कभी पढ़ न पाता और उसके पिता उसे खेती में ही लगाए रखते।

अतः पढ़ाई - लिखाई के संबंध में दत्ता जी राव रवैया सही था। उन्होंने लेखक की मदद की जो कि पढ़ सके। व वह सफल अतः लेखक ने भी खूब मेहनत की रहा।

5

Previous Pathshala

(ख)

लेखक ओम थानवी ने जब सिंधु-घाटी सभ्यता के दो शहरों में यात्रा की तो उन्होंने पाया की सिंधु सभ्यता साधन - संपन्न व इसमें ~~इसमें~~ कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं थे। पुरातत्व विभाग वैज्ञानिकों की मानें तो यहाँ के अजायबघर का समान आज भी शोभा बढ़ा रहे हैं। जब वह यात्रा के दौरान एक अजायबघर में गए थे तो उन्होंने देखा कि यहाँ औजार तो है परंतु हथियार नहीं है। जैसे हर राजा के पास हथियार की बड़ी खेप होती थी परंतु यहाँ हथियार नहीं है। इसके मतानुसार सिंधु सभ्यता राजतंत्र व धर्मतंत्र के न बल पर अनुशासित सभ्यता थी। लोग मूलतः पशुपालन व खेती करते थे। यहाँ से मिले बर्तन, मृद भांडे आदि को देखकर पता लगाया जा सकता की यहाँ के लोगों को कला में खास रुचि थी। यहाँ लोकतंत्र राजसत्ता के बल पर नहीं थी। जैसे राजा के पास हथियारों की बड़ी खेप होती है सिंधु

Previous Pathshala

घाटी सभ्यता में ऐसा कुछ भी नही है। यहाँ छोटी नावें मिली है व मिस्त्र में बड़ी नावों का प्रचलन है, यह का सामान चित्र बर्तन, आदि इसकी कहानियाँ बताते है, मंदिर, महल आदि थे परंतु वह समय के साथ हो गए। यहाँ पानी निकासी की बहुत अच्छी व्यवस्था थी।
यहाँ एक बैलगाड़ी भी मिली है जो उस समय के महानतम आविष्कारों में से एक है।
यहाँ से मिला सूती कपड़ा हजारों साल पहले की कहानी कहता है। सूइयाँ व तरह-तरह के औजार यहाँ पाये गए है। परंतु हथियार का नामोनिशा नही है। यहाँ एक महाकुंड भी है।
अतः यह सभी प्रमाण बताते है कि वहाँ के लोग अनुशासित थे और यह अनुशासन सत्ता बल के द्वारा नहीं था।

अतः सिंधु घाटी सभ्यता साधन संपन्न थी। पर इस[illegible] भव्यता का आडंबर नहीं था।

Previous Pathshala

खण्ड- क

1.

(क) भाषा व्यवसायी का अर्थ है भाषा को व्यवसाय बनाना। आजकल के राजनीतिक भाषा को व्यवसास (धंधा) बना चुके है, वह भाषा के नाम पर व्यवसाय कर रहे है, उनकी पोल तक खुलती है जब भाषा के विरोध होना शुरू हो जाता है।

(ख) संघ एक कार्य प्रणाली का अभिन्न अंग है, यह सुनिश्चित करती है देश के कार्य प्रणाली अच्छे से चलें। संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की समाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति करें। व ~~सभी~~ सर्वोच्च संविधान में लिखे ~~अनुच्छेद~~ अनुच्छेद 351 के अंतर्गत कर्तव्यों का पालन करें।

Previous Pathshala

(ग) हिंदी हमारी राजभाषा है। हमें इसका प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए क्योंकि यह अपना वर्चस्व खोते जा रही है। जिस भाषा से हम जाने जाते है उस भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।

2

(घ) भाषा विविधताओं का देश है। अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य विभिन्न राज्यों बोली जाने वाली भाषाओं से है। यहां इनका उल्लेख अकी शैली, रूप को बढ़ावा देने को हुआ है।

2

(ङ) अंग्रेजी भाषा की मानासिकता का तात्पर्य इसके बढ़ते प्रचलन से है लोग हिंदी को भूलते जा रहे है। इससे हमारी अपनी भाषा की अस्मिता आस्मिता व भविष्य सकंट मे है।

2

(च) हमारी युवा पीढ़ी अंग्रेजी भाषा की ओर आकर्षित हो रही है व हमारी भाषा की अपनी आस्मिता और भविष्य संकट में है। शिक्षा, व्यापार,

Previous Pathshala

व्यवहार, आदि किसी भी प्रक्रिया में हमारी भाषा को वर्चस्व नहीं मिल पा रहा है।

2

(छ) इसका अर्थ भाषा को बढ़ावा देने से है। उसकी समृद्धि से है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम हर क्षेत्र में हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का उपयोग करें। जिससे उसकी अस्मिता बनी रहे।

2

(ज) (i) हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का भविष्य
(ii) व्यवसायी राजभाषा मातृभाषा का व्यवसाय.

1

2

(क) जब वीर क्षमा मांगते है तो यह कलंक बन जाती है और जब क्षमता क्षमा जब शूरवीरों की श्रृंगार है।

1

(ख) प्रतिरोध अर्थात किसी के खिलाफ जाना।

Previous Pathshala

(ख) प्रतिशोध से शौर्य की शिखाएँ दीप्त होती हैं। वह हीन नरों में महापाप। यह तब आवश्यक जब मनुष्य को अपने अपमान के खिलाफ आवाज के उठानी है।

(ग) सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप इसलिए कहा गया है क्योंकि यह शूर व न हार दोनों को अभिव्यक्त करती। हारी हुई जाति के लिए सहिष्णुता अभिशाप है।

(घ) लोभ को युद्ध धर्म के विरु विरुद्ध माना गया है, यह क्षात्र धर्म के विरुद्ध है।

(ङ) इसका अर्थ है की क्रूर पौरुष जब मनुष्य में जागृत होता है तो वह धर्मयुद्ध कहलाता है। इससे मनुष्य के अंदर का प्रतिशोध प्रबुद्ध हो जाता है।

Previous Pathshala

खण्ड - ख

प्र० 6

(क) इस पत्रकारिता में फैशन, अमीरों की पार्टियाँ व, अमीर लोगों की आम जिंदगियों, और फिल्मी ~~गपशप~~ गपशप जैसी खबरें प्रकाशित होती हैं, यह अकसर पेज-थ्री में प्रकाशित होती है।

(ख) समाचार पत्र में निश्चित मानदेय पर काम करने वाले रिपोर्टर।

(ग). इसमें खबरों की गहन शोध, छानबीन, विश्लेषण किया जाता है व उन्हें प्रकाशित किया जाता है।

(घ) संवाददाताओं का काम में विभाजन उनकी रुचि के अनुसार बीट कहलाती है। उदाहरण- खेल, व्यापार आदि

Previous Pathshala

(5) ① निरक्षरों के लिए यह उपयोगी है,
② इसमें वाक्य छोटे व सरल होते हैं,
③ इसे आसानी से समझा जा सकता है।

(निबंध)

विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

भारत विविधताओं में एकता का देश है। आज हमारा देश हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है व आसमान की ऊँचाइयों को छू रहा है। परंतु विकास के लिए सबसे उपयोगी शिक्षा है। कहा भी जाता है कि "शिक्षा का बिना व्यक्ति मृतक समान है।"

आधुनिकता की बात करे तो भले ही हमारा देश आगे है परंतु आकडे बताते हैं कि हमारे देश मे केवल 74.04% (प्रतिशत) लोग शिक्षित व जिनमें महिलाओं की संख्या 65.46% (प्रतिशत) है। हम अपने आप को आधुनिक बताते परंतु आज भी हमारे देश में कई राज्य विकास के दर में पीछे है कारण है अशिक्षित होना। हमारी युवा पीढ़ी

Previous Pathshala

बेरोजगार है।
देश के कई राज्य बिहार, ओडिसा, मध्यप्रदेश इसीलिए
पीछे है क्योंकि यहाँ केवल 60-65% (प्रतिशत) लोग
ही शिक्षित है। भारत एक बड़ा देश जो विभिन्न
प्रकार की वेश-भूषाओं से प्रसिद्ध है। परंतु इन आंकडों
को देखकर हैरानी है।
देश का विकास विज्ञान, खेल, राजनीति से ही नहीं होता
इसमें जरूरत है ज्यादा से ज्यादा लोगों की शिक्षित
करने की। केरल आज भारत में विकास के दौड़
सबसे आगे है क्योंकि यहाँ 93.91% (प्रतिशत) लोग
शिक्षित है। अतः शिक्षा के बिना मनुष्य निरी पशु
समान है।
देश अगर शिक्षित होगा तभी हमारा विकास होगा।
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित 'बेटी पढ़ाओ बेटी
बचाओ'। लड़कियों को अवसर देने की एक सुलभ
मुहीम है।
आखिरकार एक लड़की पढ़ती है तो वह दो घरों का
विकास करती है। वर्तमान में कई ऐसे अभियान
चल रहे हैं परंतु जरूरत है इन्हें मूलतः

Previous Pathshala

व्यवहार मे लाने की।
अतः अगर देश को ऊंचाइयों तक पहुँचाना है
तो आवश्यक है कि देश के नागरिक शिक्षित हो।

प्र. (आलेख)

गाँवों से मजदूरों का पलायन.

गाँव से अकसर भारत में ~~कक~~ बढ़ती आबादी के लोग
शहर आते है जो कि वह अपना जीवनयापन
अच्छे कर सके। ~~भार~~ भारत में करीब 68% प्रतिशत
लोग गाँव से शहर आते है।
शहर कई साधनों भरा पूरा रहता है। इन साधन
में पढ़ाई, रोजगार प्राप्ति के अवसर प्रमुख है।
मजदुर गाँवो से शहर मे अपनी ~~जीविका~~
जीवनयापन के लिए आते है। शहर के चकाचौंध
उन्हे प्रभावित करती है।

Previous Pathshala

कई बार नियमित रूप से अवसर न मिलने की वजह से इन लोगों को अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। मूलतः यह लोग झुग्गी - झोपड़ी मे रहते है व काम अपने इच्छानुसार नहीं कर पाते है, इनकी झोपड़ियाँ नालों के पास ~~स्थित~~ होती है जिससे इन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों को झेलना पड़ता, यह लोग अनपढ़ इसलिए इनका शोषण भी किया जाता है,

अकसर कहा जाता है कि शहर की जिंदगी बढ़िया होती परंतु इन लोगों अनेक प्रकार के कष्टों को झेलना पड़ता है। गाँवो से ~~मजदू~~ मजदूरो का पलायन बढ़ता जा रहा है जो ~~सम~~ समभवतः व शहरों की जनसंख्या बढ़ा रहा है। मजदूरों का पलायन उनको कष्ट से भरी ~~जिंदगियों~~ जिंदगी देती है। हर साल भारत का बहुत बड़ा वर्ग पलायन करता है और इन समस्याओं को झेलता है।

अतः महानगरों ~~मे~~ में पलायन गाँव के मजदूरों द्वारा हर स्थिति लोगों को मायाजाल में फंसा रहा है,

Previous Pathshala

सम्भवतः जरूरत है लोगो के लिए ज्यादा से ज्याद आवास निर्माण करने की जो सस्त भी रहे व लोगो की जरूरते पूरी कर सके।

5

5

महानगरों में आवास की समस्या

देश के छ: प्रमुख महानगर दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई, मुंबई माने जाते हैं परंतु यहाँ आवास की समस्या प्रमुख है। लोगों को रहने के लिए आवास नहीं मिलते। इसका मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या है। विभिन्न छोटे शहरों से महानगरों मे अपनी जीविका चलाने के लिए आते हैं जिससे इन्हें रोजगार मिले परंतु इन्हें यहाँ आवास ही नहीं मिलते।

ऐसा कहा जाता है कि भारत के 31.16% प्रतिशत लोग शहरों मे रहते हैं। आबादी में से मुख्यतः महानगरो मे रहने वालो की समस्या बहुत अधिक है।

Previous Pathshala

इस कारण मुख्यतः लोग झुग्गी - झोपड़ी में रहना शुरू करदेते है। मुंबई का "धाराह्वी" इसी का उदाहरण है वहाँ 1450 लोगों के लिए एक शौचालय यहाँ समस्या बढती जा रही है। लोगों को आवास न मिलने के कारण कई लोग सड़क मे रहते है।

महानगरों में आवास की समस्या हाल ही कुछ सालो में बढ़ गई है। आवश्यकता है इसे सुलझाने की क्योंकि भारत की अधिकतर लोग इन्ही मे रहा करते है।

भले ही यह अनेक प्रकार के साधनों से निर्मित है परंतु लोगो को आवास न मिलना सम्भवः सबसे बड़ी मुख्य समस्या।
इसका निवारण होना आवश्यक क्योंकि कई लड़कियों के लिए इन महानगरो मे रहना मुश्किल हो गया है।

5

Previous Pathshala

7

5

परीक्षा भवन
हरिद्वार

02.04.2018

प्रति
निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केन्द्र
देहरादून

विषय - नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करना।

महोदय,
सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके दूरदर्शन केन्द्र के माध्यम से नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का

Previous Pathshala

आग्रह करना चाहती हूँ। दूरदर्शन कोई भी संदेश
भावी पीढ़ी युवा पीढ़ी है। अगर आपके
देने का सबसे उचित माध्यम है।
दूरदर्शन के माध्यम से नवीन ~~साहित्यिक~~ साहित्यिक
रचनाओं का प्रकाश किया जाए तो उनके जीवन में
इसका बहुत अच्छा फल मिलेगा।
बच्चे इन्हें देखकर सीखेंगे के अपने आप को
इनके अनुसार जीवन को यापन करेंगे।
वह मानवीय मूल्य सीखेंगे जो उनके जीवन में
सदा बने रहेंगे।
अतः आपका दूरदर्शन अगर आज के
युवाओं को प्रोत्साहित करने का प्रमुख माध्यम
हो सकता है तो इससे देश को लाभ होगा।
इन रचनाओं का कार्यक्रम देखकर युवा खुद
उत्तेजित लिखने के लिए। उनके सोचने को
दृष्टिकोण बढ़ेगा।
हमारे देश आगे बढ़ेंगे तो हमें सबसे
ज्यादा खुशी होगी।
अतः आशा करती हूँ कि आप मेरे विचारों

Previous Pathshala

के बारे मे विचार करेगें व अपने केन्द्र में नवीन साहित्यिके रचनाओं के कार्यक्रम प्रकाशित करेगें।

आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद,
भवदीया,
क० ख० ग०
परीक्षा भवन
हरिद्वार

5

2018

100/100

100/100

100/100

100/100

Previous Pathshala